

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 2, इब्रानियों 1:1-2:4: पुत्र द्वारा बोले गए वचन पर ध्यान देना सर्वोच्च प्राथमिकता है

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इब्रानियों के पहले खंड में, इब्रानियों अध्याय 1:1 से 2, 4 में, हम बहुत सावधानी से निर्मित तर्कपूर्ण प्रवाह को देखते हैं। क्योंकि इन 18 आयतों में बहुत सारी सामग्री है, इसलिए मूल न्यायवाक्य को अनदेखा करना आसान है जो इस शुरुआत में लेखक द्वारा पूरा करने की कोशिश की जा रही है, वह अलंकारिक लक्ष्य जिसे सभी व्यक्तिगत विवरण पूरा करते हैं। 1, 1 से 4 में, लेखक एक अलंकारिक रूप से प्रभावशाली प्रारंभिक कथन देता है जिसके द्वारा वह निश्चित रूप से अपने श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करेगा, जो भाषण की शुरुआत के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक है।

जो लोग इस आरंभिक भाग को सुनते हैं, जो इसकी अलंकारिक चमक और सावधानीपूर्वक संरचना से भरा है, वे आश्चर्य हो सकते हैं कि वे इस घंटे भर के उपदेश के दौरान एक प्रतिभाशाली वक्ता को सुनने जा रहे हैं। 5 से 14 अध्याय 1, श्लोक 5 से 14 में, लेखक अगले पुराने नियम से उद्धरणों की झड़ी लगाता है। यह एक ध्यानपूर्ण सुनवाई प्राप्त करने में भी योगदान देता है क्योंकि वह अपने श्रोताओं को बताता है कि वे एक आधिकारिक वक्ता, ईश्वर के पवित्र वाणी के विशेषज्ञ, और इसलिए, किसी ऐसे व्यक्ति को सुन रहे हैं जो उनके लिए ईश्वर के वाणी को विश्वसनीय रूप से खोल सकता है।

अध्याय 2, श्लोक 1 से 4 में, लेखक स्पष्ट रूप से इस आरंभिक तर्क से निष्कर्ष निकालता है, जो तब पूरे उपदेश के लिए मुख्य स्वर लगता है, क्योंकि वह श्रोताओं को मसीह के संदेश पर ध्यान देते रहने के लिए कहता है जिसे उन्होंने सुना है और उससे दूर न जाएँ। इस आरंभ में, हम यह आवश्यक न्याय-वाक्य पाते हैं। परमेश्वर ने हमसे एक पुत्र के द्वारा बात की।

यह पुत्र स्वर्गदूतों से कहीं अधिक महान है। इसलिए, यह अधिक ज़रूरी है कि हम पुत्र के ज़रिए बोले गए संदेश पर ध्यान दें, बजाय इसके कि पिछली पीढ़ियों को स्वर्गदूतों के ज़रिए परमेश्वर द्वारा दिए गए संदेश पर ध्यान देना पड़ता। पहली सदी तक, स्वर्गदूतों को परमेश्वर के कानून, टोरा को मूसा तक पहुँचाने में सहायक माना जाता था।

लेखक यह तर्क दे रहा है कि पुत्र में बोले गए संदेश के लिए टोरा, मूसा के कानून की अपेक्षा अधिक ध्यान, अधिक आज्ञाकारिता और अधिक परिश्रमपूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता है, जो उन लोगों से अपेक्षित है, जिनसे यह कहा गया था। हम इस बड़े तर्क को ध्यान में रखेंगे जिसे लेखक 1:1 से 2:4 तक बना रहा है, क्योंकि हम पद दर पद मार्ग का अधिक बारीकी से विश्लेषण करते हैं। अध्याय 1, पद 1 से 2 में आरंभिक प्रतिपक्ष में, हम इस मधुर आरंभिक कथन को सुनते हैं।

बहुत पहले परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से कई टुकड़ों में और कई तरीकों से बात की थी, लेकिन इन दिनों के अंत में, उसने हमसे एक पुत्र के माध्यम से बात की। पिछली प्रस्तुति में, हमने यहाँ बनाए जा रहे विरोधाभास का पता लगाया। पहली आयत में तीन तत्व हैं जो दूसरी आयत में समानांतर हैं, और सभी एक दूसरे के प्रति विरोधाभासी रूप से खड़े हैं।

परमेश्वर बहुत पहले बोल रहा था, न कि अब इस समय के अंत में। परमेश्वर पूर्वजों से बोल रहा था। परमेश्वर अब हमसे बोल रहा है।

ईश्वर ने सम्माननीय लेकिन निम्नतर संदेशवाहकों, भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की। ईश्वर ने हाल ही में अपने पुत्र के माध्यम से बात की है। इन विरोधी जोड़ियों में से प्रत्येक में एक अलंकारिक शक्ति है, जैसा कि लेखक आगे वर्णन करेगा।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पुत्र के पास भविष्यद्वक्ताओं से अधिक गरिमा है। इसलिए पुत्र के माध्यम से जो कुछ भी संप्रेषित किया जाता है, उसका अधिक महत्व होता है और वह अधिक ध्यान और आज्ञाकारिता की मांग करता है। बहुत पहले जो कहा गया था, उसका महत्व है, बेशक, दिव्य भविष्यवाणियों के रूप में, लेकिन वर्तमान समय में जो कहा गया है, वह और भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इसी श्रोतागण से कहा गया था, जो परमेश्वर ने जो कहा था, उसका अच्छी तरह से जवाब देने की उनकी जिम्मेदारी को बढ़ाता है।

आरंभिक वाक्य में एक तत्व का दूसरे प्रतिपक्षी खंड में कोई प्रतिरूप नहीं है, अर्थात्, यह तथ्य कि औपचारिक रूप से जो कहा गया था वह कई टुकड़ों में और कई तरीकों से कहा गया था। हालाँकि, यह लेखक की व्याख्याशास्त्र के लिए एक सुराग प्रदान करता है क्योंकि लेखक पुराने नियम में कई टुकड़ों और ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के दिव्य साधनों की खोज करता है जो पूरे इज़राइल के पवित्र इतिहास में बिखरे हुए हैं और इन भविष्यवाणियों के मसीह-केंद्रित पढ़ने में उन्हें एक बहुरूपदर्शक तरीके से एक साथ लाता है। अध्याय 1 के शेष भाग, श्लोक 5 से 13, इस संबंध में एक शानदार शुरुआत प्रदान करते हैं, 2 शमूएल, भजन और व्यवस्थाविवरण से रहस्योद्घाटन के इन कई टुकड़ों में से कुछ को बहुरूपदर्शक तरीके से बाहर निकालते हैं ताकि यह दिखाया जा सके कि कैसे ये कई टुकड़े मसीह में बोले गए और पूरे किए गए एक केंद्रित ईश्वरीय वचन में एक साथ आते हैं।

इब्रानियों के शुरुआती पैराग्राफ में बेटे के बारे में कुछ बहुत ही रोचक बातें कही गई हैं और हमें यीशु के अवतार से पहले के बारे में सोचने के लिए एक बहुत ही प्रारंभिक ईसाई गवाही दी गई है। हालाँकि, इस पैराग्राफ की पृष्ठभूमि के रूप में, हमें नीतिवचन से लेकर अंतर-नियम अवधि तक यहूदी ज्ञान परंपराओं को कच्चे माल के रूप में देखने की ज़रूरत है जिसका उपयोग इब्रानियों के लेखक ने पूर्व-अवतार पुत्र के करियर के बारे में सोचते समय किया है। यह नीतिवचन अध्याय 8 में लेडी विजडम के रूप में ज्ञान के मानवीकरण से शुरू होता है। लेडी विजडम वहाँ एक भाषण दे रही है, और वह कहती है, जब भगवान ने स्वर्ग की स्थापना की, तो मैं वहाँ थी।

जब उसने गहरे सागर की सतह पर घेरा खींचा, जब उसने ऊपर आसमान को दृढ़ किया, जब उसने गहरे सागर के झरने स्थापित किए, जब उसने समुद्र को उसकी सीमा निर्धारित की ताकि पानी उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर सके, जब उसने पृथ्वी की नींव चिह्नित की, तब मैं एक कुशल कारीगर के समान उसके बगल में थी, और मैं प्रतिदिन उसका आनंद थी, हमेशा उसके सामने आनन्दित होती थी, उसके बसे हुए संसार में आनन्दित होती थी और मानव जाति में प्रसन्न होती थी। ज्ञान के बारे में इस काफी प्राचीन कविता में, हम यह विचार पाते हैं कि सृष्टि में ईश्वर का एक भागीदार था, कि ईश्वर के साथ एक आकृति थी क्योंकि ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया था। सृष्टि में ईश्वर के भागीदार के रूप में ज्ञान का विचार कायम है, और फिर नीतिवचन यहूदी ज्ञान परंपरा को लेता है और इसे कायम रखता है।

उदाहरण के लिए, हम इस विकास को द विजडम ऑफ सोलोमन नामक पुस्तक में देखते हैं। यह एक यहूदी ग्रंथ था जो पहली शताब्दी ईस्वी के शुरुआती दशकों में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में कहीं ग्रीक में लिखा गया था। इस ग्रंथ के लेखक ने यह भी पुष्टि की है कि ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण में बुद्धि ने एक भूमिका निभाई थी।

बुद्धि सभी चीजों की निर्माता थी, और जब परमेश्वर ने दुनिया बनाई तो वह परमेश्वर के साथ मौजूद थी। बुद्धि को चल रहे शासन और सृजित व्यवस्था को बनाए रखने में भूमिका निभाने का श्रेय दिया जाता है। लेखक कहते हैं कि वह अपने आप में रहते हुए सभी चीजों को नवीनीकृत करती है, और वह सभी चीजों को अच्छी तरह से व्यवस्थित करती है।

बुद्धि की प्रकृति और बुद्धि के चरित्र के बारे में भी कथन दिए गए हैं, जो नीतिवचन में पाए जाने वाले किसी भी कथन से परे हैं। उदाहरण के लिए, फिर से सुलैमान की बुद्धि 7 में, हम पढ़ते हैं कि बुद्धि, उद्घरण, शाश्वत प्रकाश का प्रतिबिंब और ईश्वर की भलाई की छवि है। इस प्रकार बुद्धि को ईश्वर के स्वयं के चरित्र के प्रतिबिंब के रूप में और ईश्वर और सृष्टि के बीच एक मध्यस्थ के रूप में भी देखा जाता है, न केवल सृष्टि के कार्य में, बल्कि ईश्वर द्वारा बनाए गए क्रम को निरंतर बनाए रखने में, जैसे कि आज और कल और अगला दिन किसी तरह से ईश्वर के साथ बुद्धि के निरंतर काम करने पर निर्भर करता है।

इसके अलावा, परमेश्वर के कार्यों की बुद्धि के चिंतन में, सर्वशक्तिमान की अच्छाई और पूर्णता के प्रतिबिंब तक पहुँच थी। इस तरह की परंपराएँ प्रारंभिक चर्च में क्राइस्टोलॉजी के लिए कच्चा माल बन गईं। बुद्धि, परमेश्वर के मध्यस्थ, को यीशु के व्यक्तित्व में एक निश्चित चेहरा दिया गया था।

इस प्रकार, सृष्टि के एक एजेंट के रूप में, एक संधारणीय शक्ति के रूप में, और ईश्वर की अपनी छवि के प्रतिबिंब के रूप में पुत्र के पूर्व-अवतार जीवन का विवरण बुद्धि के बारे में यहूदी सांस्कृतिक ज्ञान के माध्यम से भरा गया था। लेखक पुत्र में ईश्वर द्वारा एक निश्चित शब्द बोलने के बारे में अपने शुरुआती बयानों के बाद पुत्र पर एक प्रशंसा करता है, यानी, पुत्र के सम्मान की प्रशंसा, महिमा और विस्तार करने वाली कुछ पंक्तियाँ। एक ओर, यह सीधे उस शब्द के महत्व को बढ़ाने के उद्देश्य से काम करता है जो एक पुत्र में बोला गया था, क्योंकि संदेशवाहक के सम्मान का संदेश के कारण सम्मान पर प्रभाव पड़ता है।

दूसरे, हालाँकि, यह हमें कुछ महत्वपूर्ण झलकियाँ भी देता है कि आरंभिक ईसाई मसीह के बारे में कैसे सोचते थे। और इसलिए, हम पढ़ते हैं, परमेश्वर ने एक पुत्र में बात की जिसे उसने सभी चीज़ों का वारिस ठहराया, जिसके द्वारा उसने युगों की रचना भी की, जो उसकी महिमा का सटीक प्रतिनिधित्व और उसके अस्तित्व की मुहर है, जो उसकी सामर्थ्य के वचन से सभी चीज़ों को सहता है। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह ऊँचे स्थानों में महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया।

यहाँ एक बेटे की ओर से किया गया पहला दावा यह है कि परमेश्वर ने उसे सभी चीज़ों का वारिस नियुक्त किया है। इस कथन में, लेखक भजन 2 की भाषा का सहारा लेता हुआ प्रतीत होता है, जो कि भजन 45, 46 और 110 के साथ-साथ तथाकथित शाही भजनों में से एक था। ये शाही भजन दाऊद के राजा या दाऊद के किसी उत्तराधिकारी को दाऊद के राजा के रूप में मनाने के लिए रचे गए थे।

586 ईसा पूर्व में बेबीलोन द्वारा यरूशलेम पर विजय के साथ यहूदी स्वतंत्रता समाप्त होने के बाद की लंबी शताब्दियों में, इन भजनों को राजशाही की भविष्य की बहाली के उद्देश्य से पढ़ा जाने लगा। वे मसीहाई भजन बन गए। जैसे-जैसे यहूदी इन भजनों को पढ़ते रहे, वे इस उम्मीद को जीवित रखते रहे कि ईश्वर एक दिन इस्राएल को राज्य बहाल करेगा।

ये मसीहाई भजन यीशु पर आरंभिक ईसाई चिंतन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, और हम इब्रानियों में देखेंगे कि कैसे वह लेखक, विशेष रूप से, अपनी समझ विकसित करने और यीशु के बारे में अपनी समझ प्रस्तुत करने के दौरान उनका उपयोग करना जारी रखता है। भजन 2, पद 8 में, परमेश्वर को वक्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और वह दाऊद के राजा से कहता है, मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति और पृथ्वी के छोर को तेरी सम्पत्ति बना दूंगा। यीशु को सभी चीज़ों का उत्तराधिकारी बताते हुए, लेखक यीशु, या पुत्र की पहचान उस व्यक्ति के रूप में कर रहा है, जिससे यह वादा, यह मसीहाई वादा किया गया है, और इस प्रकार वह न केवल इस्राएल के राज्य को पुत्र को दिए जाने की प्रत्याशा को साझा करता है, बल्कि पृथ्वी पर सारा अधिकार पुत्र को दिए जाने की भी।

उसे बेटे की स्थिति पर इतना ध्यान क्यों देना चाहिए? पूरे उपदेश में, हम पाएंगे कि लेखक इस शुरुआती अध्याय में जो कुछ कहता है, उसे आगे बढ़ाता है। सबसे पहले, वह श्रोताओं से वादा करता है या श्रोताओं को याद दिलाता है कि बेटे के सम्मान में उनका भी हिस्सा होगा। जहाँ यीशु गया है, वे भी वहाँ जाएँगे। बेटे को जो सम्मान दिया गया है, वह कई बेटों और बेटियों को भी मिलेगा।

इस प्रकार, बेटे की स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना, आंशिक रूप से, कई बेटों और बेटियों पर पड़े अपमान का एक उपाय भी है, जो उन्हें आश्चस्त करता है कि उनके पड़ोसी द्वारा उन्हें शर्मिंदा करना उनके मूल्य पर अंतिम शब्द नहीं है, बल्कि जब वे उसी विरासत में प्रवेश करेंगे जिसमें यीशु ने प्रवेश किया है, तो उनके मूल्य पर अंतिम शब्द ईश्वर का होगा। लेखक यीशु के साथ विश्वास तोड़ने के खिलाफ मण्डली को अपनी चेतावनियों में बेटे की स्थिति का भी उपयोग करेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया के साथ दोस्ती की खातिर ईसाई सभा से दूर होकर

जिस व्यक्ति का अपमान किया जाएगा, उसकी स्थिति जितनी बड़ी होगी, ऐसे व्यक्ति का अपमान करने के लिए उन पर पड़ने वाले परिणामों का खतरा उतना ही अधिक होगा।

इस प्रकार, जैसे-जैसे लेखक पुत्र की उच्च स्थिति पर विस्तार करना जारी रखता है, वह इस क्षण में इस यीशु को उचित रूप से जवाब देने के महत्व को उजागर करना जारी रखता है। लेखक द्वारा पुत्र के बारे में किया गया दूसरा दावा यह है कि उसके माध्यम से, ईश्वर ने युगों को भी बनाया या बनाया। यह विशेष रूप से एक ऐसा स्थान है जहाँ ज्ञान परंपराएँ प्रारंभिक ईसाई क्राइस्टोलॉजी को पोषण देती हैं।

पहले जो कहा जाता था कि बुद्धि सृष्टि में ईश्वर का भागीदार या प्रतिनिधि है, वही अब पुत्र के बारे में कहा जाता है। पुत्र के माध्यम से ही ईश्वर ने संसार की रचना की। यह पुत्र ही है जो सृष्टि का प्रतिनिधि था।

इसकी तुलना कुलुस्सियों के आरंभिक अध्याय में जो मिलता है, उससे की जा सकती है, जहाँ पौलुस कहता है कि यीशु सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है, क्योंकि उसमें स्वर्ग और पृथ्वी की सभी वस्तुएँ सृजी गईं, दृश्यमान और अदृश्य वस्तुएँ, चाहे सिंहासन हों या प्रभुत्व या शासक या अधिकारी, सभी वस्तुएँ उसके द्वारा और उसके लिए सृजी गईं। हम इब्रानियों में जो पाते हैं, उसकी तुलना चौथे सुसमाचार के आरंभिक छंदों से भी कर सकते हैं, जहाँ हम पढ़ते हैं कि आरंभ शब्द था, और शब्द परमेश्वर के साथ था, और शब्द परमेश्वर था। वह आरंभ में परमेश्वर के साथ था।

सभी चीजें उसके द्वारा अस्तित्व में आईं, और उसके अलावा, कोई भी चीज अस्तित्व में नहीं आई। इस प्रकार, इब्रानियों के लेखक सृष्टि में ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में पुत्र के बारे में इस बड़े प्रारंभिक ईसाई वार्तालाप में हिस्सा लेते हैं, जहाँ हम मसीह धर्म को आगे बढ़ाने के लिए यहूदी ज्ञान परंपराओं का उपयोग करने की व्यापक प्रवृत्ति देखते हैं। पुत्र के बारे में इस दावे में निहित है कि निर्माता को क्या देना है, इसके बारे में सामान्य ज्ञान।

जो लोग बनाए गए हैं, जिन्हें अस्तित्व का उपहार मिला है, वे सब कुछ उसी के प्रति ऋणी हैं जिसने उन्हें यह उपहार दिया है। यह मूल नैतिक सिद्धांत है जिसे न केवल यहूदी बल्कि गैर-यहूदी भी आसानी से स्वीकार करेंगे। अरस्तू ने खुद अपने निकोमैचेन नैतिकता में कहा था कि मनुष्यों को बनाने में ईश्वर की भूमिका के कारण, हम उन्हें वह सारी पूजा देने के ऋणी हैं जो हम संभवतः दे सकते हैं।

लेखक द्वारा पुत्र के बारे में किया गया तीसरा दावा यह है कि वह ईश्वर की महिमा का तेज या चमक है और ईश्वर के अस्तित्व की सटीक छाप है। यहाँ भी, हमें ज्ञान की परंपराएँ मिलती हैं, विशेष रूप से वे जो हम सुलैमान की बुद्धि में पढ़ते हैं, जो प्रारंभिक ईसाई धर्मविज्ञान को पोषित करती हैं। सुलैमान की बुद्धि के लेखक ने ज्ञान को ईश्वर की भलाई की छवि के रूप में, ईश्वर के चरित्र के सटीक प्रतिनिधित्व के रूप में बताया।

इसे अब बेटे पर लागू किया जा रहा है। यह यीशु ही है जिसमें कोई व्यक्ति ईश्वर की छवि या छाप को सबसे अच्छी तरह से देख सकता है। यह प्रारंभिक ईसाई प्रवचन के साथ भी व्यापक रूप से प्रतिध्वनित होता है।

उदाहरण के लिए, जॉन के सुसमाचार में, अध्याय 14, श्लोक 9 में, यीशु कहते हैं, " यदि तुमने मुझे देखा है, तो तुमने पिता को देखा है।" या, जैसा कि पॉल ने कुलुस्सियों 1.15 में लिखा है, मसीह अदृश्य परमेश्वर की छवि है। एक बार फिर, हमारे लेखक ने इस यीशु के महत्व के बारे में बात करने के लिए ज्ञान परंपराओं को देखने की एक व्यापक ईसाई प्रवृत्ति को साझा किया है, वास्तव में, सर्वशक्तिमान के दृश्य प्रतिनिधित्व के रूप में।

मसीह की ओर से किया गया एक और दावा यह है कि वह अपने शक्तिशाली वचन के द्वारा सभी चीजों को उठाता है। सब कुछ उठाने के द्वारा, लेखक यहाँ सभी चीजों को बनाए रखने, अपने शक्तिशाली वचन के द्वारा सभी चीजों को ले जाना जारी रखने की बात कर रहा है। हमने इसे सुलैमान की बुद्धि में लेडी विजडम की ओर से किए गए दावे में परिलक्षित होते देखा, जो सभी चीजों को नवीनीकृत करती है और अपने वचन के द्वारा सभी चीजों को बनाए रखती है।

हम कुलुस्सियों 1:17 में भी ऐसा ही दावा देखते हैं, कि सब कुछ उसी में स्थापित है। सब कुछ मसीह में कायम है। इस प्रकार, फिर से, ज्ञान परंपराएँ प्रारंभिक ईसाई मान्यताओं को सूचित करती हैं कि यीशु के रूप में अपने अवतार से पहले पुत्र क्या कर रहा था।

लेखक यहाँ पुत्र के अवतार के कारण उसकी एक बड़ी उपलब्धि की ओर मुड़ता है। उसने पापों के लिए शुद्धिकरण किया। संयोग से, यह कुलुस्सियों 1 में यीशु की प्रशंसा की एक और विशेषता है, जहाँ पद 14 में हम पढ़ते हैं, "...जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" भाषणों के परिचय के लिए यह उचित है कि भाषण के मुख्य भाग में उठाए जाने वाले प्रमुख विषयों का परिचय दिया जाए।

लेखक ने ठीक यही किया है, क्योंकि यीशु के बलिदान का तरीका और परिणाम, पापों के लिए उनका शुद्धिकरण, इस धर्मोपदेश के मुख्य अध्यायों का मुख्य विषय होगा, अर्थात् अध्याय 7 से 10 तक। लेखक ने यहाँ, बहुत ही सूक्ष्मता से, श्रोताओं को ऐसे परोपकारी के प्रति ऋण की एक और याद दिलाई है। यह यीशु, जो पूर्व-अवतार पुत्र के रूप में ब्रह्मांड का निर्माता और पालनकर्ता था, लेकिन अवतार पुत्र के रूप में उनमें से प्रत्येक का उद्धारक था, जिसने उन्हें खुद पर इतनी व्यक्तिगत कीमत चुकाकर भगवान के पास वापस लाया।

लेखक जल्दी से इस बात की याद दिलाता है कि यीशु वर्तमान में कहाँ है। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह ऊँचे स्थानों में महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया। लेखक यहाँ भजन 110 की भाषा का उपयोग कर रहा है, जिसका पहला छंद प्रारंभिक चर्च में एक महत्वपूर्ण पाठ था।

प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ। यह उल्लेखनीय है कि भजन 110 एक और शाही भजन है, जिसे मूल रूप से दाऊद के राजा के बारे में एक भजन के रूप में लिखा गया था, यहाँ तक कि उससे बात भी की गई थी। इस प्रकार, यह दाऊद के राजतंत्र और यहूदी स्वतंत्रता के गायब होने के बाद की शताब्दियों में एक महत्वपूर्ण मसीहाई संसाधन बन गया।

भजन 110 जैसे पाठ लेखक को यीशु की सांसारिक सेवकाई के बाद पुत्र के करियर के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे ज्ञान परंपराएँ अवतार से पहले की अवधि के लिए जानकारी प्रदान करती हैं। पुत्र के उत्थान की शुरुआती याद, जो क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा के रूप में, सबसे अधिक हाशिए पर, अपमानित और पीड़ित भी था, एक ऐसा विषय है जो इस पूरे उपदेश में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस दृश्यमान, अस्थायी ब्रह्मांड में शर्म अनंत काल में किसी के मूल्य का प्रतिबिंब नहीं है।

और जिस रास्ते पर बेटे ने हाशिए पर जाने और शर्मिंदगी के बीच से गुज़रते हुए कदम उठाया, वही रास्ता उसे ईश्वर के दरबार में ब्रह्मांड में सर्वोच्च सम्मान के स्थान पर ले आया। यह शुरुआत से ही श्रोताओं को याद दिलाने में मदद करेगा कि सबसे बड़े सम्मान का मार्ग वास्तव में अस्थायी अपमान को सहने का मार्ग हो सकता है, जिस मार्ग पर वे खुद कुछ समय से चल रहे हैं। और फिर, पुत्र की उच्च स्थिति के बारे में श्रोताओं को याद दिलाना, उन सभी के लिए परिणामों की याद दिलाता है, जिन्होंने इस पुत्र के साथ संरक्षक-ग्राहक संबंध में प्रवेश नहीं किया है या उसमें बने रहने का चुनाव नहीं किया है, परिणाम जो लेखक अध्याय 1 के अंत में स्पष्ट करेगा जब वह भजन 110 पद 1 को पूर्ण रूप से उद्धृत करता है, " मेरे दाहिने हाथ बैठो, जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे चरणों की चौकी न कर दूं।" इस प्रकार लेखक श्रोताओं को एक ही समय में ऐसे उच्च व्यक्तित्व के साथ जुड़ने के विशेषाधिकार की याद दिलाता है, लेकिन ऐसे व्यक्तित्व से अलग हो जाने के परिणामों की भी याद दिलाता है, इस तरह से कार्य करने के परिणामों की भी, कि कोई अपने आप को पुत्र के घराने के एक वफादार सदस्य के बजाय पुत्र का शत्रु पाता है।

लेखक ने पुत्र की महानता, स्थिति और उपलब्धियों के बारे में अपने आरंभिक कथनों को स्वर्गदूतों के संबंध में पुत्र के सापेक्ष सम्मान के बारे में एक कथन के साथ समाप्त किया। वह पुत्र के स्वर्गदूतों से इतना महान होने की बात करता है क्योंकि उसे जो नाम विरासत में मिला है वह उनके नाम से अधिक प्रतिष्ठित है। यह स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठाता है कि लेखक ने अब स्वर्गदूतों पर ध्यान क्यों देना शुरू कर दिया है। यदि हम ध्यान में रखें कि लेखक कहाँ जा रहा है, अर्थात् अध्याय 2:1 से 4, और वह उपदेश, तो हम उस प्रश्न का उत्तर जान जाएँगे।

लेखक स्वर्गदूतों के संबंध में पुत्र के अधिक सम्मान की स्थापना कर रहा है, ताकि स्वर्गदूतों के माध्यम से बोले गए वचन की अपेक्षा पुत्र में परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन के प्रति और भी अधिक गंभीर रूप से प्रतिबद्ध प्रतिक्रिया की मांग की जा सके। हमें लेखक के यहाँ दिए गए कथन की पृष्ठभूमि और इस अध्याय के शेष भाग में उसके द्वारा दिए जाने वाले कथनों की सराहना करने के लिए थोड़ा रुककर प्रारंभिक यहूदी धर्म में स्वर्गदूतों के बारे में सोचना चाहिए। बेशक, स्वर्गदूतों को पूरे यहूदी ग्रंथों में परमेश्वर के स्वर्गीय दल के हिस्से के रूप में जाना जाता है।

वे ईश्वर के मंत्री हैं, ईश्वर के प्रतिनिधि हैं जो ईश्वर के संदेश पहुंचाते हैं, और वे अपराधियों पर ईश्वर के निर्णय और दंड लागू करते हैं। उन्हें अक्सर ईश्वर के सेवकों और ईश्वर के ग्राहकों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करते हुए देखा जाता है। स्वर्गदूतों को अक्सर ऐतिहासिक पुस्तकों या द्वितीय मंदिर काल की पुस्तकों में भी देखा जाता है, जो एक दिव्य सेना के रूप में इज़राइल के दुश्मनों के खिलाफ लड़ते हैं।

दूसरे मंदिर काल में स्वर्गदूतों की एक विशेष भूमिका विकसित होती है, जो परमेश्वर के लोगों के अनुरोधों के मध्यस्थों, ईश्वरीय अनुग्रह के मध्यस्थों, प्रार्थनाओं के उत्तरों के रूप में उनकी भूमिका है। महादूत परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होते हैं। वास्तव में, उन्हें अक्सर उपस्थिति के स्वर्गदूतों के रूप में कहा जाता है।

इसलिए, उन्हें ईश्वर के उन ग्राहकों के लिए ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए अच्छी स्थिति में देखा जाने लगा है जो सांसारिक क्षेत्र में ईश्वर से और भी दूर हैं। यह तेजी से माना जाता है कि स्वर्गदूत धर्मी लोगों की प्रार्थनाओं को ईश्वर की ओर निर्देशित करते हैं। हम इसे प्रथम हनोक, टोबिट या रहस्योद्घाटन की पुस्तक जैसी अतिरिक्त-विहित पुस्तकों में पा सकते हैं।

पुरोहिती कार्यों का श्रेय स्वर्गदूतों को दिया जाने लगा है क्योंकि स्वर्ग में परमेश्वर के निवास को तेजी से स्वर्गीय मंदिर के रूप में देखा जाने लगा है। स्वर्गदूत स्वर्गीय मंदिर के प्रांगणों के पुजारी और मंत्री बन जाते हैं, जिसका लेवी और उसके वंशजों की सेवकाई पृथ्वी पर प्रतिबिम्बित होगी। इसकी सबसे उल्लेखनीय अभिव्यक्ति लेवी के नियम से आती है, जो संभवतः पहली शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान रचित बारह कुलपतियों के नियमों में से एक है।

वहाँ हम पढ़ते हैं, वहाँ उसके साथ, परमेश्वर के साथ, प्रधान स्वर्गदूत हैं जो धर्मी लोगों के अज्ञानता के सभी पापों के लिए प्रभु की सेवा करते हैं और प्रायश्चित्त बलिदान चढ़ाते हैं। वे प्रभु को एक सुखद सुगंध, एक तर्कसंगत और रक्तहीन बलिदान चढ़ाते हैं। यह इब्रानियों के लिए कुछ प्रासंगिकता रखता है।

पहली शताब्दी ई. में, श्रोता स्वर्गदूतों, मूसा और लेवी के पुजारियों के बारे में सोच सकते हैं, किसी न किसी रूप में, सभी ईश्वर के अनुग्रह के मध्यस्थ और ईश्वर के लोगों के लिए दिव्य सहायता के रक्षक। इस प्रकार, इब्रानियों के लेखक ने तीनों को एक साथ रखा है क्योंकि वह पहले स्वर्गदूतों, फिर मूसा, फिर लेवी के पुजारियों की तुलना मसीह से करता है, यह दर्शाता है कि सभी मध्यस्थ हमारे महान महायाजक यीशु की तुलना में फीके हैं। मंदिर काल के दौरान स्वर्गदूतों को दी जाने वाली एक और महत्वपूर्ण भूमिका टोरा के मध्यस्थों की भूमिका है।

उदाहरण के लिए, पॉल ने गलातियों को लिखे पत्र में लिखा है, तो फिर व्यवस्था क्यों? इसे अपराधों के कारण जोड़ा गया था जब तक कि वह संतान न आ जाए जिसके लिए वादा किया गया था। और इसे मध्यस्थ द्वारा स्वर्गदूतों के माध्यम से नियुक्त किया गया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्टीफन के भाषण में भी यही विचार परिलक्षित होता है। स्टीफन कहते हैं कि मूसा वही था जो जंगल में मण्डली में उस स्वर्गदूत के साथ था जिसने माउंट सिनाई पर उससे और हमारे पूर्वजों से बात की थी, और उसे हमें देने के लिए जीवित भविष्यवाणियाँ मिलीं।

फिर स्टीफन अपने उपदेश के अंत में फिर से बोलता है, और कहता है कि तुम ही वे लोग हो जिन्हें स्वर्गदूतों द्वारा निर्धारित व्यवस्था प्राप्त हुई है, और फिर भी तुमने उसका पालन नहीं किया है। यह पृष्ठभूमि इब्रानियों के लिए भी प्रासंगिक है क्योंकि इब्रानियों अध्याय 2 पद 2 में, लेखक स्वर्गदूतों के माध्यम से बोले गए वचन के बारे में बात करेगा, जिसके द्वारा उसका स्पष्ट रूप से

मतलब मूसा की वाचा से है, वह व्यवस्था जो अब सीधे परमेश्वर द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के मध्यस्थों और संदेशवाहकों, स्वर्गदूतों द्वारा दी गई थी। अध्याय 1, पद 4 में लेखक का दावा कि पुत्र स्वर्गदूतों से इस हद तक महान है क्योंकि उसे जो नाम विरासत में मिला है वह उनके नाम से बड़ा है, अध्याय 1 के शेष भाग में शास्त्रों के उद्धरणों की एक श्रृंखला के लिए प्रारंभिक बिंदु बन जाता है। यह अक्सर अनदेखा किया जाता है कि ये उद्धरण लेखक के दावे के समर्थन में तर्कों की एक श्रृंखला विकसित करते हैं, न कि यह कि दर्शकों में से कोई भी इस दावे पर गंभीरता से विवाद करेगा कि पुत्र स्वर्गदूतों से बड़ा था।

हमें इस अध्याय को इस तरह से पढ़ना चाहिए कि लेखक अपने श्रोताओं के साथ आम सहमति बना रहा है, न कि लेखक अपने श्रोताओं के साथ विवाद के बिंदुओं में प्रवेश कर रहा है। अध्याय 1 में लेखक जो कुछ कह रहा है, उसका तीखापन उसके बाद अध्याय 2 श्लोक 1 में आया। शास्त्रों के उद्धरणों की यह श्रृंखला तर्क के तीन खंडों में आती है।

पहला श्लोक 5 और 6 में है, दूसरा श्लोक 7 से 12 तक फैला हुआ है, और तीसरा श्लोक 13 और 14 में है। पहले खंड में, हम पढ़ते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों में से किससे कभी कहा है, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है। और फिर, मैं उसका पिता बनूंगा, और वह मेरा पुत्र बनेगा।

लेखक यहाँ पहले भजन 2 पद 7 और फिर 2 शमूएल अध्याय 7 पद 14 को उद्धृत करता है, ये दोनों ही ऐसे ग्रंथ हैं जो दाऊदी राजशाही विचारधारा के केंद्र में हैं। हालाँकि, वे मसीहाई ग्रंथ बन गए हैं क्योंकि पूरे इज़राइल ने गैर-यहूदी वर्चस्व के तहत काम करना जारी रखा है, उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा है जब परमेश्वर यहूदिया की स्वतंत्रता और एक स्वतंत्र राजशाही को बहाल कर सकता है, अधिमानतः दाऊद के घराने से। इब्रानियों के लेखक ने अनुमान लगाया है कि उसके श्रोता भजन 2 या 2 शमूएल 7 14 जैसे पाठ को मसीहाई रूप से और विशेष रूप से पुत्र, यीशु के बारे में बोले गए रूप में पढ़ने के लिए सहमत होंगे।

यह आरंभ अध्याय 1, श्लोक 13 के साथ एक सुंदर समावेश भी बनाता है; श्लोक 5 और श्लोक 13 दोनों एक ही अलंकारिक प्रश्न से शुरू होते हैं: परमेश्वर ने कभी स्वर्गदूतों में से किससे कहा? इस तर्क में दूसरा चरण व्यवस्थाविवरण 32, श्लोक 43 का एक रूपांतर शामिल करता है। जैसा कि लेखक लिखते हैं, लेकिन जब वह फिर से ज्येष्ठ पुत्र को बसे हुए क्षेत्र में ले जाता है, तो वह कहता है, और परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। यह पाठ व्यवस्थाविवरण 32 में मूसा के गीत से जाना जाता है।

हालाँकि, व्यवस्थाविवरण 32 पद 43 के पाठ में कुछ दिलचस्प भिन्नता है। मसोरेटिक पाठ, जिस पर पुराने नियम के हमारे अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद निर्भर करते हैं, में यह खंड बिल्कुल भी नहीं है: परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। सेप्टुआजेंट में, पुराने नियम का यूनानी अनुवाद जो पहली सदी में प्रचलित था, उसमें लिखा है, परमेश्वर के सभी पुत्र उसकी आराधना करें।

इब्रानियों में, यह कहा गया है कि परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। यह संभव है कि हमारे लेखक ने ब्रह्मांड विज्ञान के अनुरूप पाठ को थोड़ा बदल दिया हो, जिसकी पुष्टि वह और उसके श्रोता करते हैं। परमेश्वर के कई पुत्रों के बारे में बात करना व्यवस्थाविवरण और प्राचीन इस्राएल के संदर्भ में समझ में आता होगा।

हालाँकि, दूसरे मंदिर और नए नियम के समय में, यहूदी लेखकों द्वारा ईश्वर के स्वर्गीय पुत्रों या अन्य संभावित दिव्य प्राणियों के बारे में बात करने की संभावना बहुत कम थी। इसलिए, इसका अर्थ स्वर्गदूतों से लगाना ज़्यादा समझदारी भरा होता। हालाँकि, यह घटना कब घटित होती है? ईश्वर के स्वर्गदूतों को पुत्र की आराधना कब करनी चाहिए? इसके लिए हमें इस संदर्भ में यूनानी शब्द ओइकुमने के अर्थ के बारे में थोड़ा और सोचना होगा।

यह आबाद क्षेत्र क्या है जिसमें पुत्र को फिर से लाया गया है? यहाँ, इब्रानियों अध्याय 2 पद 5 में इस शब्द के दूसरे प्रयोग को देखना सहायक है क्योंकि वहाँ ओइकुमने को आने वाले क्षेत्र, आने वाले ओइकुमने के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। इस संदर्भ में, फिर, लेखक सांसारिक क्षेत्र, भौतिक दुनिया के आबाद क्षेत्रों को नहीं देख रहा है, बल्कि दूसरे क्षेत्र, परे के क्षेत्र, दिव्य क्षेत्र को देख रहा है। यह वह क्षेत्र है जो लेखक और उसके श्रोताओं के संबंध में आ रहा है क्योंकि वे अभी उस क्षेत्र में मौजूद नहीं हैं।

लेकिन दूसरे दृष्टिकोण से, वह क्षेत्र भौतिक पृथ्वी और दृश्यमान आकाश से परे पहले से ही मौजूद है। भजन संहिता के सेप्टुआजेंट अनुवाद में, आकाश और पृथ्वी को हिलाने योग्य और हटाने योग्य बताया गया है। ग्रीक शब्द ऑरानोई, स्वर्ग और गेई, पृथ्वी, इसी अर्थ में उपयोग किए जाते हैं।

लेकिन भजन संहिता के यूनानी अनुवाद में यूनानी शब्द ओइकुमने को लगातार अडिग बताया गया है। ऐसा लगता है कि इब्रानियों के लेखक ने भजन संहिता के यूनानी अनुवाद में स्वर्ग और पृथ्वी तथा ओइकुमने के बीच किए गए भेदों से अपना संकेत लिया है। इब्रानियों के लेखक ने अडिग क्षेत्र को ईश्वरीय क्षेत्र से जोड़ा होगा, न कि सृजित क्षेत्र से, जिसे हिलाने और हटाने के लिए नियत किया गया है।

इसलिए, इब्रानियों 1:6 मसीह के दिव्य क्षेत्र में लौटने के बारे में है, जिसे उसने अपने अवतार में छोड़ा था। तब उसकी वापसी उसके महिमामंडन का क्षण है, जिसमें उसका परमेश्वर के दाहिने हाथ पर अपना स्थान ग्रहण करना भी शामिल है। जबकि पुत्र के पास अपने अवतार से पहले स्वर्गदूतों की तुलना में अधिक बड़ा दर्जा था, उसकी विजयी वापसी उसके उत्कर्ष का जश्न मनाने का एक अवसर था, जिसमें स्वर्गदूत उसके सामने गिरकर उसकी मृत्यु तक आज्ञाकारिता और मानव जाति के उद्धार के लिए उसके प्रावधान के बाद उसके सर्वोच्च सम्मान को स्वीकार करते हैं।

इब्रानियों 1:7 में हम जिन पवित्रशास्त्रीय उद्घरणों का सामना करना शुरू करते हैं, उनके दौरान लेखक ने दूसरा तर्कपूर्ण कदम उठाया है। जैसा कि वह लिखता है, एक ओर स्वर्गदूतों के संबंध में, परमेश्वर कहता है, जो अपने स्वर्गदूतों की आत्माओं और अपने सेवकों को आग की लपटों में

बनाता है। लेकिन पुत्र के संबंध में, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग बना रहेगा, और तेरे राज्य की छड़ी धार्मिकता की छड़ी है। तू ने न्याय से प्रेम किया है, और अधर्म से।

इस कारण, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे साथियों से बढ़कर तुम्हें आनन्द के तेल से अभिषेक किया है। लेखक को इस शाही भजन, भजन 45 में, अन्य स्वर्गीय प्राणियों, उसके साथियों से ऊपर पुत्र की महिमा को दर्शाने का एक वारंट मिलता है। यहाँ अभिषेक की भाषा विशेष रूप से मसीहा के शाही होने के साथ-साथ उसकी पुरोहित भूमिका और स्थिति के लिए भी उपयुक्त है, जैसा कि लेखक अपने उपदेश के माध्यम से बहुत विस्तार से बताएगा।

यीशु न केवल राजा के रूप में, बल्कि उससे भी बढ़कर, यीशु हमारे महायाजक के रूप में। पुत्र स्थायी है, हमेशा के लिए सिंहासन पर विराजमान है, जैसा कि इस भजन के पाठ से पता चलता है। दूसरी ओर, लेखक संकेत देता है कि स्वर्गदूत थोड़े ज़्यादा चंचल होते हैं।

वे भगवान की आज्ञा का पालन करने के लिए हवा या आग की लपटों में तब्दील हो सकते हैं। लेकिन बेटा स्थिर, विश्वसनीय और अपरिवर्तनीय है। यह विरोधाभास अगले पवित्रशास्त्रीय उद्धरण में और भी अधिक जोरदार तरीके से सामने आता है।

और हे यहोवा, तू ने आदि से पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों की रचना है। ये नाश हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा। ये सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे, और तू उन्हें लबादे के समान लपेट लेगा; वस्त्र के समान वे बदल जाएँगे।

लेकिन आप वही हैं, और आपके साल कभी खत्म नहीं होंगे। यह पाठ, भजन 102, मूल रूप से एक भजन का हिस्सा है जो उद्धार के लिए भगवान से विनती करता है, आंशिक रूप से याचक के सीमित जीवनकाल को भगवान के अंतहीन वर्षों के साथ तुलना करता है। हालाँकि, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने इन छंदों को उद्धृत किया है, लेखक भौतिक दृश्य क्षेत्र, आकाश और पृथ्वी और सूर्य के बीच अंतर को उजागर कर रहा है।

भौतिक जगत अस्थायी है। यह नष्ट होने के लिए नियत है, जैसे कोई वस्त्र पुराना हो जाता है और बदल दिया जाता है या जैसे कोई लबादा लपेट दिया जाता है। लेकिन सूर्य हमेशा के लिए रहता है।

आप हमेशा एक जैसे ही रहते हैं, और आपके साल कभी खत्म नहीं होंगे। यह लेखक के तर्क के लिए दो महत्वपूर्ण तरीकों से प्रासंगिक है। सबसे पहले, सूरज ही वह चीज है जो टिकती है।

सूर्य से जुड़ाव अनंत काल तक के लिए महत्वपूर्ण चीज़ों से जुड़ाव है। इस दृश्यमान सृष्टि में कोई भी व्यक्ति जो कुछ भी हासिल या खो सकता है, वह अपेक्षाकृत कम समय के लिए मायने रखता है। यह दर्शकों की पसंद को उनके संदर्भ में प्रभावित करेगा।

क्या वे, अल्पकालिक लाभ के लिए, वास्तव में उस व्यक्ति की पकड़ को छोड़ देंगे जो उन्हें अनंत काल तक लाभ प्रदान कर सकता है? यह लेखक के तर्क के लिए भी प्रासंगिक है कि सूर्य का अपरिवर्तनीय चरित्र सूर्य को सर्वोच्च विश्वसनीय बनाता है। यह यहाँ एक सूक्ष्म तरीके से सामने

आता है, लेकिन अधिक पूर्ण रूप से, यह इब्रानियों 13 पद 8 में सामने आएगा। हालाँकि, यहाँ, जब लेखक कहता है कि तुम वही हो, तो यह उसके कहने के संदर्भ में है कि तुम स्थिर हो। उदाहरण के लिए, डियो क्राइसोस्टोम, एक देर से पहली और दूसरी शताब्दी की शुरुआत में एक यूनानी राजनेता और दार्शनिक, ने अविश्वास के विषय पर एक भाषण लिखा था।

इस भाषण में उन्होंने उन कारणों को सूचीबद्ध किया कि हम किसी दूसरे इंसान पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते। उन्होंने लिखा कि, उद्धरण, कोई भी किसी के बारे में नहीं जानता कि वह कल तक वैसा ही रहेगा या नहीं। कोई नहीं जानता कि कोई व्यक्ति कल भी वैसा ही रहेगा जैसा वह आज है, और इससे भरोसा खत्म हो जाता है।

हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने पहले ही यह घोषित करना शुरू कर दिया है कि सूर्य भविष्य में विश्वास के लिए एक विश्वसनीय आधार है। भौतिक सृष्टि के पास जो कुछ भी है, वह इसके करीब नहीं आता। लेखक द्वारा उठाया गया तीसरा तर्कपूर्ण कदम अध्याय एक के अंत में अंतिम दो छंदों के साथ आता है।

उसने कभी किस स्वर्गदूत से कहा है, मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ? यहाँ एक निहित विरोधाभास है। जो किसी स्वर्गदूत से नहीं कहा गया था, वह भजन 110 की प्रारंभिक ईसाई समझ में सूर्य से कहा गया था, जिसे आम तौर पर यीशु से बोले गए एक दिव्य वाणी के रूप में पढ़ा जाता था। पहले से ही, ऐतिहासिक यीशु को इस श्लोक को एक मसीहाई पाठ के रूप में सुनाने के लिए याद किया जाता है, जिसे उनके विरोधी अनदेखा कर रहे थे।

उदाहरण के लिए, मार्क 12 में, हम पाते हैं कि यीशु ने भजन 110 निकाला और शास्त्रियों से पूछा, यदि दाऊद मसीहा को प्रभु कहता है, तो मसीहा दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है? यह फिर से इस्राएली या यहूदा के राजा के सिंहासनारूढ़ होने के बारे में एक शाही भजन है और भविष्य के राजा, मसीहा के बारे में एक मसीहाई भजन बन गया है। यहाँ इस आयत का युगांतिक महत्व श्रोताओं को यह याद दिलाना है कि पुत्र, यीशु जिसका वे अनुसरण करते हैं, अंत समय का विजेता है। जिसके सभी शत्रु उसके शासन के अधीन होंगे।

वास्तव में, जिसके सभी शत्रु विशेष रूप से अपमानित हैं, उसके पैरों के नीचे एक पायदान के रूप में स्थापित हैं। लेखक अपने पाठकों के लिए उस युगांतिक क्षितिज को स्पष्ट रूप से दृष्टि में रखेगा क्योंकि युगांतिक क्षितिज उस संकट का परिचय देता है जिसके साथ वह चाहता है कि वे मुख्य रूप से चिंतित हों। जब तक उनकी नज़र इस दुनिया की चीज़ों पर है, तब तक ईसाई समूह के प्रति प्रतिबद्धता नुकसानदेह लगने लग सकती है।

हालाँकि, बेटे की वापसी के दिन पर अपनी आँखें मज़बूती से टिकाए रखने के कारण, वे लेखक की योजना को स्वीकार करने और उसका पालन करने के लिए अधिक उपयुक्त होंगे, जिसमें विश्वास की स्वीकारोक्ति के लिए निरंतर प्रतिबद्धता और एक-दूसरे में और ईसाई गवाह में निरंतर निवेश शामिल है। लेखक स्वर्गदूतों का जिक्र करते हुए एक और बयानबाजी वाले सवाल के साथ तर्क-वितर्क की इस अवधि को बंद कर देता है। क्या वे सभी सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं

जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार पाने वाले हैं? यहाँ बयानबाजी वाला सवाल फिर से स्वर्गदूतों के बारे में लेखक के बयानों से सहमत होने के लिए दर्शकों की तत्परता को मानता है।

यह एक और संकेत है कि लेखक यहाँ श्रोताओं के बीच किसी तरह की अपर्याप्त क्राइस्टोलॉजी या श्रोताओं के बीच स्वर्गदूतों की पूजा के लिए अति-उत्साह को संबोधित नहीं कर रहा है। स्वर्गदूत, संक्षेप में, ब्रह्मांडीय सेवक हैं, जैसा कि उनकी प्रजातियों को दिए गए नाम में निहित है: स्वर्गदूत, एंजेलोई, संदेशवाहक और दूत। अलौकिक प्राणियों के रूप में उनकी महिमा और स्थिति केवल यीशु की महान महिमा और स्थिति की ओर इशारा करती है, जो अब परमप्रधान के दाहिने हाथ पर सिंहासनारूढ़ है।

इस अंतिम अलंकारिक प्रश्न में एक वाक्यांश पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। लेखक विश्वासियों को ऐसे लोगों के रूप में संदर्भित करता है जो उद्धार प्राप्त करने वाले हैं। उद्धार के पीछे ग्रीक शब्द परिचित है, सोटेरिया, मुक्ति और मोक्ष।

इब्रानियों के लेखक के पास उद्धार के बारे में सोचने के लिए कई ईसाइयों, खासकर आज के ईसाइयों से बहुत अलग संदर्भ है। आज कई ईसाई उद्धार को ऐसी चीज़ के रूप में सोचते हैं जो पहले से ही प्राप्त है, जिसका पहले से ही आनंद लिया जा चुका है। इब्रानियों के लेखक, 1 पतरस के लेखक की तरह ही, उद्धार के बारे में भविष्य की भलाई के रूप में बात करते हैं, जो मसीह के दूसरे आगमन पर या ईश्वरीय क्षेत्र में हमारे स्वागत के रूप में आता है जिसके लिए मसीह ने हमें उपयुक्त बनाया है।

यहाँ लेखक के संदर्भ की रूपरेखा और अंतिम उद्धार के बारे में बात करने के लिए उद्धार या मोक्ष के उनके विशेष उपयोग के कारण, इब्रानियों के धर्मशास्त्र की किसी भी चर्चा में किसी के उद्धार को खोने के विचार को पेश करना विशेष रूप से समस्याग्रस्त है। जब हम इब्रानियों 6:1 से 8 पर कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे तो हम इस पर वापस आएँगे। लेखक ने अध्याय 1, श्लोक 5 से 14 में अपने कई लक्ष्यों को आगे बढ़ाया है।

उन्होंने यीशु के सम्मान के लिए श्रोता की प्रशंसा को बढ़ाया है। उन्होंने उस सम्मान को स्वीकार न करने के खतरनाक परिणामों पर संकेत दिया है। उन्होंने भौतिक और दृश्यमान सृष्टि के अस्थायी मूल्य को नए सिरे से स्थापित किया है, ताकि आशा और भरोसे के लिए एकमात्र ठोस आधार पुत्र ही हो, न कि श्रोताओं द्वारा अपने पड़ोसियों की नज़र में भौतिक वस्तुओं या सम्मान की प्राप्ति, जो वर्तमान में पुत्र के शत्रु भी हैं।

श्रोताओं को पहले से ही इस प्रश्न के बारे में सोचने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैं इस पुत्र को कैसे जवाब दूँ ताकि मैं अनुग्रह में रहूँ और उसके शत्रुओं में शामिल न हो जाऊँ? यह ठीक वैसा ही प्रश्न है जिसका उत्तर लेखक आगे देता है। अध्याय 2 की शुरुआत के साथ, लेखक अध्याय 1 के तर्कपूर्ण लक्ष्य पर पहुँचता है। इस कारण से, पुत्र की महानता के कारण, जो इतनी महान है कि उसने स्वर्गदूतों को धूल में पीछे छोड़ दिया है, हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम उन बातों पर और अधिक ध्यान दें जो हमने सुनी हैं, कहीं ऐसा न हो कि हम बहक जाएँ।

यदि स्वर्गदूतों के माध्यम से बोले गए वचन की पुष्टि की गई थी, और हर अपराध और अवज्ञा के कार्य को न्यायोचित रिकॉर्ड मिला, तो हम कैसे भागेंगे यदि हमने उद्धार की इतनी बड़ी उपेक्षा की? इस कारण से, इन शुरुआती शब्दों के साथ, लेखक स्पष्ट रूप से पहचानता है कि वह पिछले अध्याय का क्या देने वाला है, और वह जिस खतरे की पहचान करता है वह है भटकने का खतरा। यदि हम उस संदेश पर ध्यान नहीं देते हैं जो हमने सुना है, तो हम एक सुरक्षित मार्ग से भटक जाएंगे। यह उस कार्य का एक वैचारिक रंग प्रदान करता है जिसे ईसाई के पड़ोसी वास्तव में सकारात्मक रूप से मानते हैं।

लेखक यहाँ जो प्रस्तुत करता है वह भटकाव है, जिसे ईसाई के गैर-ईसाई पड़ोसी वापस पटरी पर आने के रूप में मानेंगे। इस चेतावनी के भीतर, फिर, लेखक एक छोटे से बड़े तर्क की रचना करता है, जो उस समय के यहूदी और ग्रीको-रोमन बयानबाजी दोनों में तर्क का एक बहुत ही सामान्य रूप है। कमतर मामला उस संदेश की वैधता है जो स्वर्गदूतों के माध्यम से बोला गया था, अर्थात् टोरा, और जिस तरह से इसे भगवान द्वारा पुष्टि की गई थी और भगवान के लोगों द्वारा गंभीरता से लिया गया था, जैसे कि कानून की शर्तों को या तो इनाम या सजा के साथ लागू किया गया था।

अब सबसे बड़ा मामला वह संदेश है जो पुत्र के माध्यम से बोला गया था। यदि टोरा, जो कि छोटा शब्द है, इतनी गंभीरता से लागू किया गया था, तो बड़े संदेशवाहक, पुत्र के माध्यम से दिए गए शब्द को कितनी अधिक सख्ती से लागू किया जाएगा? इसलिए, पहले अध्याय में मसीह के सम्मान पर ध्यान केंद्रित करने से, मसीह को दिए गए अपमान की गंभीरता बढ़ जाती है जब उनके संदेश और उनके उपहार की उपेक्षा की जाती है। सुसमाचार के वादे के प्रति ऐसी उपेक्षा दिखाना, और इसलिए उस संदेश के वाहक का अपमान करना, टोरा का उल्लंघन करने वालों की तुलना में किसी को अधिक खतरे में डाल देगा।

पादरी चाहते हैं कि उनके श्रोता सुसमाचार को दृढ़ता से थामे रहें और परमेश्वर और उसके पुत्र का सम्मान करने के उद्देश्य से जीवन जिएं, जो उनकी सर्वोच्च प्राथमिकताएँ हैं। यीशु के महिमामंडन ने इस एजेंडे को आगे बढ़ाना और भी अधिक आवश्यक बना दिया है। यह प्रारंभिक उपदेश परमेश्वर के वचन को सुनने और उस पर प्रतिक्रिया करने के महत्व पर जोर देता है, जो इस धर्मोपदेश के पहले चार अध्यायों में एक केंद्रीय विषय होगा।

ऐसा भी लगता है कि आने वाले खतरों की चेतावनी अध्याय 4, 6, 10 और 12 में घोषित महान उद्धार और लाभों की उपेक्षा करती है। इसलिए, इब्रानियों 2 की आयत 1 से 2, धर्मोपदेश की मुख्य बात लगती है। लेखक अध्याय 2, आयत 3 और 4 में मण्डली को मिले संदेश की विश्वसनीयता के बारे में बात करता है।

यह पुत्र के माध्यम से बोला गया था, लेकिन इसकी पुष्टि उन लोगों द्वारा भी की गई जिन्होंने देहधारी पुत्र की सेवकाई को देखा था। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके बीच परमेश्वर के अलौकिक कार्यों द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी। इस तरह, लेखक श्रोताओं को याद दिलाता है कि जिस संदेश के इर्द-गिर्द उन्होंने अपने जीवन को पुनर्गठित किया है, और जिसके लिए उन्होंने महत्वपूर्ण, यद्यपि अस्थायी नुकसान सहा है, वह एक विश्वसनीय संदेश है।

यह एक चट्टान है जिस पर निर्माण किया जा सकता है, न कि कोई ऐसा काल्पनिक मिथक जो उनके समुदाय में फैल गया। तो, हम इब्रानियों 1:1 से 2:4 के इस शुरुआती खंड की बयानबाजी की ताकत की समीक्षा कर सकते हैं। वक्ता श्रोताओं का ध्यान सबसे पहले पुत्र पर, स्वयं यीशु के व्यक्तित्व पर केंद्रित करता है। ऐसा नहीं है कि श्रोता यीशु के बारे में गलत बातें सोच रहे हैं, लेकिन वे संभवतः यीशु के बारे में पर्याप्त नहीं सोच रहे हैं, यीशु के बारे में पर्याप्त नहीं सोच रहे हैं, उनके द्वारा लाए गए लाभों के बारे में, और आने वाले लाभों के वादों के बारे में नहीं सोच रहे हैं।

वह श्रोताओं का ध्यान उनकी स्थिति में उच्च दांव पर लगा हुआ है। ईसाई आंदोलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें जो भी अस्थायी सम्मान या अच्छाई दी है, उससे कहीं अधिक खोने को है। वह श्रोताओं का ध्यान स्थान और समय के संदर्भ में बड़ी तस्वीर पर भी केंद्रित करता है।

वह श्रोताओं को उनके वर्तमान जीवन की ब्रह्माण्ड संबंधी और परलोक संबंधी पृष्ठभूमि की याद दिला रहे हैं। वह उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी की अस्थायी प्रकृति की याद दिलाते हैं, उन्हें दृश्य क्षेत्र से संबंधित हर चीज के कम मूल्य की याद दिलाते हैं ताकि वे अपनी तात्कालिक स्थिति में विकल्पों का बेहतर मूल्यांकन कर सकें और ताकि वे ऐसे विकल्प चुन सकें जो अनंत काल के लिए फायदेमंद हों। भले ही यह पवित्रशास्त्र से एक ऐसे मामले के बारे में गहन तर्क है जिसे हम शायद हल्के में लें, स्वर्गदूतों की तुलना में सूर्य की श्रेष्ठता, उपदेश के इस हिस्से में इब्रानियों के लेखक की चुनौती जोर से और स्पष्ट रूप से सामने आती है।

वह हमसे पूछेगा, क्या हम सूर्य के माध्यम से घोषित संदेश को अपने जीवन में उचित स्थान दे रहे हैं? क्या हम इतने महान उद्धार की उपेक्षा करने के खतरे में हैं? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसे हमें खुद से पूछते रहना चाहिए क्योंकि हमारे संदर्भ में हमारे शिष्यत्व को एक बहुत ही व्यस्त जीवन में एक सौम्य जोड़ बनाना बहुत आसान है, जो कि अधिकांश समय, हमारे अस्थायी कल्याण को सुरक्षित करने में निवेश किया जाता है। हम अपने समय, अपनी ऊर्जा और अपने संसाधनों का कितना हिस्सा इस जीवन की चीजों में, अपनी नौकरियों में, अपने या अपने परिवार के लिए प्रदान करने जैसी अच्छी चीजों में, सामाजिक नेटवर्क और कनेक्शन या शौक या मनोरंजन में निवेश करते हैं? और हम यीशु का अनुसरण करने में, मसीह-समानता में और अधिक निकटता से बढ़ने में, उन स्थानों पर जाने में कितना निवेश करते हैं जहाँ यीशु चाहते हैं कि हम उनके दूत के रूप में जाएँ, चाहे सेवा करने के लिए या सुसमाचार साझा करने के लिए या, किसी तरह, हमारे आस-पास की दुनिया तक उनके हाथों की तरह पहुँचने के लिए? आत्म-परीक्षण के ऐसे प्रश्नों के हमारे उत्तर हमें दिखाएंगे कि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताएँ क्या हैं, चाहे वे हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी और खुशहाली हों या ईश्वर की सेवा, मसीह के प्रति हमारी उचित प्रतिक्रिया, उस रिश्ते को महत्व देना और उस रिश्ते के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियाँ बाकी सब चीजों से ज़्यादा हों। लेखक द्वारा किया गया एक और योगदान हमें यह याद दिलाना है कि यीशु के चेहरे में हम ईश्वर का चेहरा देखते हैं।

हम मनुष्य यीशु के जुनून और लालसाओं में परमेश्वर के जुनून और परमेश्वर की लालसाओं को और अधिक खोजते हैं। क्राइस्टोलॉजी अंततः केवल इस बारे में नहीं है कि यीशु कौन है, बल्कि यह भी है कि परमेश्वर कौन है, परमेश्वर किसकी परवाह करता है, और परमेश्वर हमसे क्या

अपेक्षा करता है, यदि हम लेखक के मूल विश्वास को साझा करते हैं कि पुत्र परमेश्वर के अस्तित्व की सटीक छाप है। जब हम विशेष रूप से सुसमाचारों का अध्ययन करते हैं, और देखते हैं कि यीशु को किस बात की गहरी परवाह थी, उसने अपना समय कैसे बिताया, उसने अपना समय किसके साथ बिताया, उसने अपने शिष्यों को कैसे इकट्ठा किया और उन्हें दुनिया में खुद को निवेश करने और दुनिया में खुद को निवेश न करने के लिए कैसे सिखाया, तो हम परमेश्वर के हृदय, परमेश्वर के मूल्यों, परमेश्वर के एजेंडे के बारे में अधिक सीख रहे हैं, और इसलिए अपने दैनिक जीवन के माध्यम से परमेश्वर के हृदय के साथ खुद को अधिक सावधानी से संरेखित करने का निमंत्रण, वास्तव में विशेषाधिकार प्राप्त कर रहे हैं।

लेखक हमें लगातार यह समझने की चुनौती देता है कि क्या अस्थायी है और क्या शाश्वत है और यह समझने की चुनौती देता है कि कैसे खुद को निवेशित करना है, खुद को संरेखित करना है और खुद को बुद्धिमानी से खर्च करना है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ हमें प्रभावित करने वाली चीजों में से एक है जीवन की छोटी अवधि और हर घंटे का महत्व। क्या हम समय को मारते हैं, या हम समय का उपयोग करते हैं? क्या हम इस दुनिया में अपने सीमित समय को अनंत काल के लिए बुद्धिमानी से निवेश करते हैं, या हम अपने आप को, घंटों को और उस जीवन को बर्बाद कर देते हैं जो ईश्वर ने हमें उस चीज़ की खोज में दिया है जो मसीह की वापसी के महान दिन पर बस वाष्पित हो जाएगी जब ईश्वर दुनिया का न्याय करेगा? इसका एक परिणाम यह है कि हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे जीवन को किस ठोस चट्टान पर आधारित करना है, जिस पर हमें अपने जीवन का निर्माण करना है।

लेखक ने यह याद दिलाते हुए कि मसीह शाश्वत है, जबकि संसार और उसकी सभी चिंताएँ क्षणभंगुर और निरर्थक हैं, उपदेशक भजन, मसीह और उसके द्वारा बोले गए शब्दों को ठोस चट्टान के रूप में देखता है। बाकी सारी ज़मीन डूबती रेत है।